श्री टोडरमल स्मारक भवन में विराजमान होने वाली प्रतिमाओं का –

पाषाण शुद्धि कार्यक्रम संपन्न

श्री टोडरमल स्मारक भवन में विराजमान होने वाले 81 इंच की खड़गासन अवगाहना वाले पार्श्वनाथ एवं बाहुबलि भगवान तथा 51 इंच की खड़गासन अवगाहना वाले वासुपूज्य एवं नेमिनाथ भगवान के जिनबिम्ब जिस पाषाण से बनने वाले हैं, उनकी शुद्धि का कार्यक्रम भी प्रतिमाओं की अगवानी के साथ-साथ दिनांक 6 अक्टूबर को रखा गया।

इस अवसर पर बाहुबलि भगवान के जिनबिम्ब के पाषाण की शुद्धि बाहुबलि भगवान के विराजमानकर्त्ता श्री अजितभाई जैन बड़ौदा, पार्श्वनाथ भगवान के पाषाण की शुद्धि पार्श्वनाथ भगवान के विराजमानकर्त्ता श्री भगवानजी भाई परिवार लंदन की ओर से डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल व दिलीपभाई शाह ने की।

इसके अतिरिक्त नेमिनाथ भगवान के चार जिनबिम्बों के पाषाणों की शुद्धि श्री जितेन्द्रजी जैन जयपुर, वासुपूज्य के चार जिनबिम्बों के पाषाणों की शुद्धि श्री आनन्दकुमारजी पाटनी इन्दौर द्वारा की गई।

वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल के सभी सदस्यों, ब्र. बहनों व समस्त शिविरार्थी साधर्मियों द्वारा भी पाषाण शुद्धि की गई।

इसी प्रसंग पर शिल्पकारों का सम्मान करते हुये उन्हें प्रतिमा निर्माण में शुद्धता रखने हेतु आवश्यक प्रतिज्ञायें दिलायी गयी।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया मंगलायतन एवं पण्डित संजयजी जैन मंगलायतन ने किया। ●

जयपुर पंचकल्याणक में बनने वाले –

प्रमुख पात्रों का स्वागत

श्री टोडरमल स्मारक भवन में 21 -27 फरवरी तक होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में विधिनायक भगवान आदिनाथ के माता-पिता श्री टोडरमल स्मारक भवन की स्वाध्याय सभा के नियमित श्रोता श्रीमती सुशीला-शान्तिलालजी अलवरवाले बनने जा रहे हैं।

दिनांक 7 अक्टूबर को जैसे ही इसकी घोषणा हुई तो पूरी सभा में एक उत्साह की लहर दौड़ गई। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका एवं महामंत्री डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा उनका शॉल-श्रीफल द्वारा हार्दिक स्वागत किया गया। इसके बाद पूरी सभी ने माता-पिता एवं उनके पूरे परिवारजनों का हार्दिक अभिनन्दन किया।

इसी क्रम में दिनांक 15 अक्टूबर को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के नायक सौधर्म इन्द्र का टोडरमल स्मारक भवन जयपुर पहुँचने पर हार्दिक स्वागत किया गया। सौधर्म इन्द्र श्री अशोककुमार जैन का माला-तिलक-श्रीफल-शॉल भेंटकर स्वागत किया गया। डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने उन्हें प्रशस्ति-पत्र भेंट किया। महिला-मण्डल के सदस्यों ने उनकी धर्मपत्नी सौधर्म इन्द्राणी श्रीमती किरण जैन का स्वागत किया। **(शेष पृष्ठ 34 पर ...)**

वीतराग–विज्ञान

वीतराग–विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग–विज्ञान का , घर–घर होय प्रसार ।।

वर्ष : 30 (वीर नि. संवत् - 2537) 340 अंक : 4

जो-जो देखी वीतराग...

जो–जो देखी वीतराग ने, सो–सो होसी वीरा रे।
बिन देख्यो होसी नहिं क्योंही, काहे होत अधीरा रे ।।
जो–जो देखी वीतराग... ।। 1 ।।

समयो एक बढै नहीं घटसी, जो सुख–दुःख की पीरा रे।
तू क्यों सोच करै मन मूरख, होय वज्र ज्यों हीरा रे ।।
जो–जो देखी वीतराग... ।। 2 ।।

लगै न तीन कमान बान कहुँ, मार सकै नहीं मीरा रे।
तू सम्हारि पौरुष बल अपनो, सुख अनन्त तो तीरा रे ।।
जो–जो देखी वीतराग... ।। 3 ।।

निश्चय ध्यान धरहु वा प्रभु को, जो टारे भव भीरा रे।
'भैया' चेत धरम निज अपनो, जो तारे भव नीरा रे ।।
जो–जो देखी वीतराग... ।। 4 ।।

– भैया भगवतीदासजी

छहढाला प्रवचन

निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का व्याख्यान

परद्रव्यनतैं भिन्न आपमें रुचि सम्यक्त्व भला है।
आपरूप को जानपनो सो सम्यक्ज्ञान कला है।।
आपरूप में लीन रहे थिर सम्यक्चारित सोई।
अब व्यवहार मोक्षमग सुनिये, हेतु नियत को होई।।२।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

बाहर के अप्रयोजनभूत तत्त्व को जानने में आत्मा का हित नहीं है; उस बाह्यज्ञान द्वारा मोक्ष नहीं साधा जाता; परलक्ष्यी शास्त्रज्ञान भी मोक्ष को नहीं साध सकता। जो ज्ञान आत्मा के मोक्ष का साधन न हो, जो आनन्द का अनुभव न दे; उसको ज्ञान कौन कहे ? शुद्धात्मा की ओर झुका हुआ ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है, वही मोक्ष को साधने वाला और आनन्द का दाता है। अंतर में शुद्धात्मा के ऐसे ज्ञानसहित शास्त्रज्ञान आदि हो, उसको व्यवहार से मोक्ष का कारण कहा जाता है। शुद्धात्मा की सम्यक्श्रद्धा सहित नवतत्त्व की प्रतीति को व्यवहार सम्यग्दर्शन कहा जाता है। निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र में तो शुद्धात्मा की स्वसत्ता का ही अवलंबन है, उसमें पर का अवलंबन किंचित् मात्र भी नहीं है। ऐसा स्वाधीन आत्माश्रित निश्चय-मोक्षमार्ग है।

पर से भिन्न आत्मा के वास्तविक स्वरूप के श्रद्धा-ज्ञान के बाद ही उसमें लीनता हो सकती है; निजस्वरूप में लीनता द्वारा जितनी वीतरागी शुद्धता हुई, उतना सम्यक्चारित्र है। व्रत संबंधी शुभ विकल्प चारित्र नहीं है, वह तो चारित्रदशा के साथ निमित्तरूप है। वीतरागता ही चारित्र है, राग तो आस्रव का ही कारण है, मोक्ष का नहीं।

अहा ! ऐसे स्पष्ट वीतरागी मार्ग को भूलकर अज्ञानी लोगों ने राग को मोक्षमार्ग मान लिया है। राग में मोक्षमार्ग मानना तो काँच के टुकड़े में अति मूल्यवान चैतन्यहीरा मानने जैसी बात है। जो राग से मोक्ष की प्राप्ति होना मानता है, उसने तो राग जितना ही मोक्ष का मूल्य समझ लिया है, वीतरागी आनन्दरूप मोक्ष की उसे पहचान ही नहीं है। भाई ! पूर्ण आनन्दमय मोक्षपद ऐसा नहीं है कि वह तुझे राग में मिल जाये। वीतरागी आनन्दरूप मोक्ष को प्राप्त करने का मूल्य भी कोई अलौकिक है। अखंड चैतन्यस्वभाव को स्वीकार करके उसके श्रद्धा-ज्ञान-चारित्ररूप वीतरागभाव से ही

मोक्ष सधता है, इससे जुदा दूसरा कोई साधन नहीं है।

अहा ! ज्ञान आनन्द की अनन्त किरणों से चमचमाता हुआ चैतन्य हीरा तो वीतरागता का ही पुंज है, उसमें लीनतारूप वीतरागता ही सच्चा चारित्र है। ऐसे चारित्र को भगवान ने परम धर्म कहा है। उसको छोड़कर जो पर में और रागादि व्यवहार भावों में लीन होकर उसको चारित्रधर्म मान लेता है, वह मिथ्यादृष्टि है, उसको तो व्यवहारचारित्र भी नहीं होता। (लीन भयो व्यवहार में, मुक्ति कहाँ सो होय ?) पहले चारित्र ले लो, बाद में सम्यग्दर्शन होगा - ऐसा जो मानता है, वह न तो सम्यग्दर्शन को जानता है और न चारित्र को। अरे भाई ! श्रद्धा के बिना चारित्र कैसा ? आत्मा को जाने बिना तू लीन किसमें होगा ? चारित्र का मूल कारण तो सम्यग्दर्शन और ज्ञान है, उसको अंगीकार न करके तूने शुभरागरूप चारित्र को सम्यग्दर्शन का कारण माना; अत: तेरे अभिप्राय से तो सारा मोक्षमार्ग रागरूप ही हुआ, उसमें कहीं वीतरागता या शुद्धात्मा का आश्रय करने की बात आयी ही नहीं। स्वद्रव्य के आश्रयरूप वीतरागता के बिना मोक्षमार्ग कैसा ? शुद्धात्मा के आश्रित ही सच्चा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र है और वही मोक्षमार्ग है।

समयसार गाथा २७६-२७७ में कहते हैं कि शुद्धात्मा ही ज्ञान है; क्योंकि वह ज्ञान का आश्रय है, शुद्धात्मा ही दर्शन है; क्योंकि वह दर्शन का आश्रय है और शुद्धात्मा ही चारित्र है; क्योंकि वह चारित्र का आश्रय है - इसप्रकार निश्चय है। निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र शुद्ध आत्मा के ही आश्रित हैं; अत: अभेदरूप से इन तीनों को शुद्ध आत्मा ही कहा है।

शास्त्रों का ज्ञान, नवपदार्थों की श्रद्धा और पंचमहाव्रत के शुभभावरूप चारित्र व्यवहार है; क्योंकि उनके होने पर भी यदि शुद्धात्मा का आश्रय न हो तो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र नहीं होते।

अत: पराश्रित ऐसा व्यवहार मोक्षमार्ग में निषेध्य है और स्वाश्रित ऐसा निश्चय ही मोक्षमार्ग में उपादेय है - यह सिद्धान्त है।

पंडितजी ने समयसारादि शास्त्रों के अनुसार इस छहढाला की रचना की है; संस्कृत-व्याकरण के पढ़े बिना भी समझ में आ सके - ऐसी सरल पुस्तक है और छोटे-बड़े सभी के लिए उपयोगी है। इसके दूसरे छंद में निश्चयरत्नत्रय का कथन किया, अब तीसरे छंद से लेकर व्यवहार सम्यग्दर्शन और उसके विषयरूप जीव-अजीवादि तत्त्वों का कथन करेंगे।

देखो ! पहले निश्चयमोक्षमार्ग दिखाकर कहा कि अब व्यवहार-मोक्षमार्ग सुनो। जहाँ निश्चय हो, वहाँ व्यवहार कैसे होता है, इसका ज्ञान कराते हैं। जिसको निश्चय का लक्ष्य नहीं, उसको व्यवहार कैसा ? व्यवहार को नियत का हेतु कहा; परन्तु वह

व्यवहार कौन-सा ? वही जो निश्चय के साथ हो। जहाँ निश्चय हो, वहाँ ऐसा व्यवहार हो, उसे ही व्यवहार कहते हैं। निश्चय न हो और अकेला व्यवहार हो, उसे हेतु नहीं कहा जाता। इसप्रकार व्यवहार को हेतु 'धर्मास्तिकायवत्' जानना। जैसे धर्मास्तिकाय गमन में हेतु है; परन्तु किसको ? जो स्वयं गति करते हैं उनको; वैसे व्यवहार निश्चय का हेतु है; परन्तु किसको ? जो स्वाश्रय से निश्चय धर्म प्रगट करते हैं, उनको। किसी ने पंचमहाव्रतादि व्यवहार का तो पालन किया; परन्तु स्वाश्रय से निश्चय-सम्यग्दर्शनादि प्रगट न किया तो उसके लिए वह व्यवहार हेतु भी न हुआ। यदि अकेला व्यवहार भी निश्चय का हेतु होता हो तो -

'मुनिव्रत धार अनंतबार ग्रीवक उपजायो।
पै निज आतमज्ञान बिना सुख लेश न पायो।।'

पंचमहाव्रतादि व्यवहार अनन्त बार किया तो भी जीव को वह निश्चय श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र का हेतु क्यों न हुआ ? उपादान के बिना निमित्त क्या करे ? उपादान-निमित्त के दोहे में पं. भगवतीदासजी भी कहते हैं कि -

उपादान निज बल जहाँ, तहाँ निमित्त पर होय।
भेदज्ञान-परवान-विधि, विरला बूझे कोय।।

आत्मा परद्रव्यों से सदा भिन्न है; ऐसे अपने आत्मा का अटल विश्वास सम्यग्दर्शन है। अटल अर्थात् जो कभी नहीं मिटता, आत्मा से कभी भिन्न नहीं होता, सिद्धदशा में भी आत्मा के साथ सदैव रहता है, वह निश्चय सम्यग्दर्शन है। व्यवहार सम्यग्दर्शन तो सदैव विकल्परूप है, पर के आश्रित है, वह सिद्धदशा में नहीं रहता। वह आत्मारूप नहीं, परन्तु विकल्परूप है; अत: वीतरागदशा होने पर वह विकल्प छूट जाता है। निश्चय सम्यग्दर्शन तो आत्मारूप है, वह सिद्धदशा में भी सदा काल रहता है। उसीप्रकार निश्चय सम्यग्ज्ञान तथा निश्चय सम्यक्चारित्र को भी आत्मारूप जानना; वे विकल्प से भिन्न हैं।

विकल्परूप व्यवहारभावों से आत्मा भिन्न होने पर भी उनके साथ आत्मा को एकमेक मानना अज्ञानी जीवों का मिथ्या प्रतिभास है और उसका फल संसार है। समस्त परभावों से भिन्न आत्मा को देखना-जानना-अनुभव करना ही मोक्षमार्ग है।

भव्यजीवों को ऐसे मोक्षमार्ग का सदा सेवन करना चाहिए। शुभराग के काल में भी धर्मी उस राग को मोक्षमार्ग नहीं समझते; परन्तु उस समय भी स्वभाव के आश्रय से रत्नत्रय की जितनी शुद्धता हुई, उसी को वे मोक्षमार्ग समझते हैं।

इसप्रकार सच्चा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र ही मोक्षमार्ग है; सच्चा अर्थात् निश्चय; **'जो सत्यारथरूप सो निश्चय'** और उस निश्चय के साथ भूमिका के योग्य व्यवहार होता है, उसका कथन आगे के छंद में कहेंगे। ●

नियमसार प्रवचन –

स्वभाव में जीवस्थान आदि नहीं

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 42वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

णो खइयभावठाणा णो खयउवसमसहावठाणा वा।
ओदइयभावठाणा णो उवसमणे सहावठाणा वा।।४२।।

इस जीव के क्षायिक क्षयोपशम और उपशम भाव के।
एवं उदयगत भाव के स्थान भी होते नहीं।।42।।

जीव को चार गति के भवों में परिभ्रमण, जन्म, जरा, मरण, रोग, शोक, कुल, योनि, जीवस्थान और मार्गणास्थान नहीं हैं।

(गतांक से आगे ...)

वायुकायिक : इसके सात लाख करोड़ कुल हैं। ऐसे भेद पर्याय में पड़ते हैं; परन्तु शुद्धजीव में ऐसे भेद नहीं हैं।

वनस्पतिकायिक : कन्दमूल आदि के एक टुकड़े में अनन्त जीव हैं, ऐसे जीवों के शरीर के आकारों के भेद अठाईसलाख करोड़ हैं; परन्तु वे पर्याय में हैं, शुद्धजीव में नहीं हैं।

जो जीव शुद्धजीव की पहिचान नहीं करते उन्हें ऐसे आकाररूप जन्म लेना पड़ता है, इसलिये शुद्धजीव की पहिचान करो – ऐसा कहते हैं।

एक शरीर में एक जीव हो उसे प्रत्येक वनस्पतिकाय कहते हैं और एक शरीर में अनन्त आत्मा हो उसे साधारण वनस्पतिकाय कहते हैं। आलू आदि में ऊपर दिखाई देने वाला तो उनका शरीर है, उसमें अन्दर अनन्त आत्मायें हैं – जिन्हें केवलज्ञानी अपने दिव्यज्ञान में प्रत्यक्ष देखते हैं।

दोइन्द्रिय : खटमल आदि दोइन्द्रिय जीव हैं। उनके शरीर के आकारों के भेद सातलाख करोड़ हैं। वे सब पर्याय में हैं, शुद्धजीव में नहीं।

तीनइन्द्रिय : चींटी आदि तीन इन्द्रिय जीव हैं। उनके शरीर के आकारों के भेद

आठ लाख करोड़ हैं। वे सब पर्याय में हैं, शुद्धजीव में नहीं।

चतुरिन्द्रिय : मक्खी, भौंरा आदि जीवों के आकार के भेद नवलाख करोड़ हैं। वे भी सब पर्याय में हैं, शुद्धजीव में नहीं।

पंचेन्द्रिय : पंचेन्द्रिय जल में रहने वाले मछली, मगरमच्छ आदि असंख्य जीव हैं। उनके शरीर के आकारों के भेद साढ़े बारह लाख करोड़ हैं। वे शुद्धजीव में नहीं हैं।

खेचरजीव : उड़नशील पक्षी असंख्यात हैं। उनके शरीर के आकारों के भेद बारह लाख करोड़ हैं। वे सब भेद पर्याय में हैं, शुद्धजीव में नहीं।

चतुष्पाद : गाय, भैंस आदि चार पैरों वाले जीव असंख्यात हैं। उनके शरीर के आकारों के भेद दशलाख करोड़ हैं। वे पर्याय में हैं, शुद्धजीव में नहीं।

पेट से चलने वाले (रेंगने वाले) जीव :- सर्पादि जीवों के शरीर के आकारों के भेद नवलाख करोड़ हैं। वे सभी पर्याय में हैं, शुद्धजीव में नहीं।

नारक : नीचे सात नरक हैं। उनमें असंख्य नारकी हैं। उनके शरीर के आकारों के भेद पच्चीसलाख करोड़ हैं। वे पर्याय में हैं, शुद्धजीव में नहीं।

मनुष्य : मनुष्य के आकार के भेद बारह लाख करोड़ हैं। वे भी शुद्धजीव में नहीं।

देव : देवों के आकार के भेद छब्बीसलाख करोड़ हैं। वे भी पर्याय में हैं, शुद्धजीव में नहीं।

इसभाँति एकसौ साढ़े सत्तानवे लाख करोड़ कुल हैं।

इस प्रकार शरीर के आकारों के भेद - कुल के भेदरूप व्यवहार की बात भी सर्वज्ञ के अतिरिक्त अन्य कौन जान सकता है ? एक समय की पर्याय में भिन्न-भिन्न जीवों के शरीर के आकारों की अपेक्षा से ऐसे भेद पड़ते अवश्य हैं; परन्तु शुद्धजीव की दृष्टि से देखा जाय तो त्रिकाल शुद्ध कारणपरमात्मा में ऐसे कुल के भेद नहीं हैं; अतः ऐसे भेदरूप अवतार न लेना हो तो अभेद शुद्धकारण परमात्मा की श्रद्धा, ज्ञान करना और ऐसा करने से पर्याय में भी कुलरहित दशा प्राप्त हो जायेगी।

यह शुद्धभाव का अधिकार है। शुभाशुभभाव आत्मा की पर्याय में होते हैं उनकी तो नहीं; किन्तु शुद्धस्वभाव के आश्रय से जो शुद्धभाव नवीन प्रगट होता है उसकी भी यहाँ बात नहीं है। यहाँ तो चैतन्यस्वभाव - एकरूप शुद्धस्वभाव जो शुद्धता प्रकट होने का कारण है - ऐसे अनादि अनन्त एकरूप कारणशुद्धभाव का अधिकार है। कारणशुद्धभाव कहो, कारणपरमात्मा कहो, एकरूप सदृशस्वभाव

कहो, चैतन्यस्वभाव कहो, परमपारिणामिकभाव कहो - सभी एकार्थवाचक हैं। ऐसे शुद्धभाव के आश्रय से धर्मदशा प्रकट होती है।

भिन्न-भिन्न आकाररूप से होना पर्याय में होता है; परन्तु वे आकार अथवा कुल जीव के शुद्धभाव में नहीं हैं। अब योनि अर्थात् उत्पत्ति स्थान की बात करते हैं।

योनि के भेद जीव की पर्याय के साथ सम्बन्ध रखते हैं, त्रिकाली शुद्धभाव में वे भेद नहीं हैं।

पृथ्वीकाय के जीवों के उपजने के स्थान के भेद सात लाख योनिमुख हैं। तथैव अपकाय, अग्निकाय और वायुकाय के जीवों के भी सात-सात लाख योनिमुख हैं। नित्य-निगोद के जीवों के तथा नित्य निगोद में से निकलने के बाद पुनः निगोद में गए ऐसे इत्तर निगोद के जीवों के भी सात-सात लाख योनिमुख हैं। वनस्पति काय के जीवों के दस लाख, द्वीन्द्रिय जीवों के दो लाख, तीन इन्द्रिय जीवों के दो लाख, चतुरिन्द्रिय जीवों के भी दो लाख, देवों के चार लाख, नारकियों के चार लाख, तिर्यंचों के चार लाख तथा मनुष्यों के चौदह लाख योनिमुख हैं। इसप्रकार कुल मिलाकर चौरासी लाख योनिमुख हैं।

यह सभी भेद एकसमय की पर्याय में लागू पड़ते हैं; किन्तु त्रिकाली शुद्धभाव में नहीं हैं।

चौदह जीवस्थानों के भेद पर्याय में हैं, जीव के शुद्धभाव में ऐसे भेद नहीं।

सूक्ष्म (दृष्टिगोचर न हो ऐसे) एकेन्द्रिय - पर्याप्त और अपर्याप्त (अर्थात् जिनकी पर्याप्ति पूर्ण न हुई हो ऐसे), स्थूल एकेन्द्रिय - पृथ्वी जल इत्यादि पर्याप्त और अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय तथा चतुरिन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त, असंज्ञी तथा संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त - ऐसे भेदवाले चौदह जीवस्थान हैं। जीव की पर्याय में ऐसे जुदा-जुदा भेद दृष्टिगोचर होते हैं, परन्तु त्रिकाल शुद्ध आनन्दकन्द आत्मा में ऐसे भेद नहीं हैं।

चौदह मार्गणास्थान के भेद पर्याय में हैं, जीव के शुद्धस्वभाव में नहीं।

गति :- मनुष्य, देव, तिर्यंच और नरक ऐसी चार गतियाँ हैं। यह गतियाँ पर्याय में है, शुद्धजीवों में गति नहीं है।

इन्द्रिय :- एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के भेद पर्याय में हैं, शुद्धजीव में नहीं।

(क्रमशः)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : सम्यक्त्व का आत्मभूत लक्षण क्या है ?

उत्तर : स्व-पर का यथार्थ भेदज्ञान सदा सम्यक्त्व के साथ ही होता है तथा यह दोनों पर्यायें एक ही स्व-द्रव्य के आश्रय से होती हैं, इसलिये भेदविज्ञान सम्यक्त्व का आत्मभूत लक्षण है। गुण-भेद की अपेक्षा से सम्यक्त्व का आत्मभूत लक्षण निर्विकल्प प्रतीति है और सम्यक्त्व का अनात्मभूत लक्षण भेदविज्ञान है – ऐसा भी कहा जाता है; किन्तु निर्विकल्प अनुभूति को सम्यक्त्व का लक्षण नहीं कहा; क्योंकि वह सदा टिकी नहीं रहती। इतनी बात अवश्य है कि सम्यक्त्व के उत्पत्तिकाल में अर्थात् प्रकट होते समय निर्विकल्प अनुभूति अवश्यमेव होती है; इसलिए उसे 'सम्यक्त्वोत्पत्ति' अर्थात् सम्यक्त्व प्रकट होने का लक्षण कह सकते हैं।

अनुभूति सम्यक्त्व के सद्भाव को प्रसिद्ध अवश्य करती है; परन्तु जिस समय अनुभूति नहीं हो रही होती है, उस समय भी सम्यक्त्वी के सम्यक्त्व का सद्भाव तो रहता ही है; इसलिए अनुभूति को सम्यक्त्व के लक्षण के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। लक्षण तो ऐसा होना चाहिए कि जो लक्ष्य के साथ सदैव रहे और जहाँ लक्षण न हो, वहाँ लक्ष्य भी न हो।

प्रश्न : अनुभूति को सम्यग्दर्शन का लक्षण कह सकते हैं या नहीं ?

उत्तर : अनुभूति को लक्षण कहा है; लेकिन वास्तव में तो वह ज्ञान की पर्याय है, सही लक्षण तो प्रतीति ही है। केवल आत्मा की प्रतीति – यह श्रद्धान (सम्यग्दर्शन) का लक्षण है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन प्रगट करने के लिए पात्रता कैसी होनी चाहिए ?

उत्तर : पर्याय सीधी द्रव्य को पकड़े, वह सम्यग्दर्शन की पात्रता है। तदतिरिक्त व्यवहार-पात्रता तो अनेक प्रकार की कही जाती है। मूल पात्रता तो दृष्टि द्रव्य को पकड़कर स्वानुभव करे, वही है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन प्राप्त करने वाले की व्यवहार योग्यता कैसी होती है ?

उत्तर : निमित्त से अथवा राग से सम्यग्दर्शन नहीं होता, पर्यायभेद के आश्रय से भी नहीं होता, अन्दर में ढलने से ही सम्यग्दर्शन होता है, अन्य किसी विधि से नहीं; इसप्रकार की दृढ श्रद्धा-ज्ञान होना, वही सम्यग्दर्शन होने वाले की योग्यता है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन के लिए खास प्रकार की पात्रता का लक्षण क्या है ?

उत्तर : जिसको अपने आत्मा का हित करने के लिए अन्दर से वास्तविक लगन हो, आत्मा को प्राप्त करने की तड़फड़ाहट हो, दरकार हो, वास्तविक छटपटाहट हो; वह कहीं भी अटके बिना – रुके बिना अपना कार्य करेगा ही।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन न होने में भावज्ञान की भूल है अथवा आगमज्ञान ही ?

उत्तर : अपनी भूल है। यह जीव स्व-तरफ नहीं झुककर, पर-तरफ रुकता है – यही भूल है। विद्यमान शक्ति को अविद्यमान कर दिया अर्थात् प्राप्त शक्ति को अप्राप्त जैसा समझ लिया, अपनी त्रिकाली शक्ति के अस्तित्व को नहीं पहचाना – यही अपनी भूल है। त्रिकाली वर्तमान शक्ति के अस्तित्व को स्वीकार कर ले – देख ले तो भूल टल जाय।

प्रश्न : तत्त्वविचार तो सम्यग्दर्शन प्राप्त करने का निमित्त है। उसका मूल साधन क्या है ?

उत्तर : मूल साधन अन्दर में आत्मा है, वहाँ दृष्टि का जोर आवे और 'मैं एकदम पूर्ण परमात्मा ही हूँ'- ऐसा विश्वास आवे, जोर आवे और दृष्टि अन्तर में ढले तब सम्यग्दर्शन होता है। उससे प्रथम तत्त्व का विचार होता है, उसकी भी रुचि छोड़कर जब अन्दर में जाता है तब उस विचार को निमित्त कहा जाता है।

प्रश्न : नवतत्त्व को जानना सम्यग्दर्शन है या शुद्धजीव को जानना सम्यग्दर्शन है ?

उत्तर : नवतत्त्व को यथार्थरूप से जानने पर उसमें शुद्धजीव का ज्ञान भी साथ में आ ही जाता है तथा जो शुद्धजीव को जानता है उसको नवतत्त्व का भी यथार्थ ज्ञान अवश्य होता है। इसप्रकार नवतत्त्व के ज्ञान को सम्यक्त्व कहो अथवा शुद्धजीव के ज्ञान को सम्यक्त्व कहो – दोनों एक ही हैं। (ज्ञान कहने पर उस ज्ञानपूर्वक की प्रतीति को सम्यग्दर्शन समझना) इसमें एक विशेषता यह है कि सम्यक्त्व प्रकट होने की अनुभूति के समय में नवतत्त्व के ऊपर लक्ष्य नहीं होता, वहाँ तो शुद्धजीव के ऊपर ही उपयोग लक्षित होता है और 'यह मैं हूँ'- ऐसी जो निर्विकल्प प्रतीति है, उसके ध्येयभूत एकमात्र शुद्धात्मा ही है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

6 से 10 दिसम्बर	दाहोद (गुज.)	पंचकल्याणक
19 से 25 जनवरी 2012	राघौगढ (म.प्र.)	पंचकल्याणक
30 जन.से 5 फर. 2012	अजमेर (राज.)	पंचकल्याणक
21 से 27 फरवरी 2012	जयपुर (राज.)	पंचकल्याणक

समाचार दर्शन -

चौदहवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 2 से 11 अक्टूबर 2011 तक आयोजित चौदहवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन श्री ताराचंदजी सोगानी परिवार जयपुर के करकमलों से हुआ।

उद्घाटन सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री निहालचन्दजी घेवरचन्दजी जैन जयपुर ने, प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री टीकमचंदजी पल्लीवाल, वैशाली नगर, जयपुर ने किया।

मुख्य प्रवचन – शिविर में प्रतिदिन ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज के आस्रव अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये। डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व प्रथम प्रवचनों में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर के पश्चात् रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रवचनों के पूर्व पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली एवं अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई के व्याख्यानों का लाभ मिला।

शिक्षण कक्षायें – षट्कारक पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा, गुणस्थान विवेचन पर ब्र. यशपालजी जैन द्वारा, नयचक्र (द्रव्यार्थिक नय भेद-प्रभेद) पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा, समयसार (कर्त्ताकर्माधिकार) पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा द्वारा, तत्त्वार्थसूत्र पर पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा, नयचक्र (द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिक) पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा एवं क्रमबद्धपर्याय पर डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली द्वारा कक्षायें ली गईं।

प्रौढ कक्षा (प्रात: 5.45 से 6.30 तक) – इसमें पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित कमलकुमारजी पिड़ावा के व्याख्यानों का लाभ मिला। इसके तत्काल बाद 6.40 से 7.00 बजे तक साधना चैनल पर प्रतिदिन प्रसारित होने वाले डॉ. भारिल्ल के प्रवचन का प्रसारण प्रवचन हॉल में ही बड़े पर्दे पर किया जाता था।

दोपहर में बाबू युगलजी के सी. डी. प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन हुये। तत्पश्चात् व्याख्यानमाला के अन्तर्गत पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री 'ओजस्वी' आगरा, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित शिखरचंदजी शास्त्री सागर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, डॉ. नेमचंदजी शास्त्री खतौली, पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन, पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर आदि विशिष्ट विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

विशिष्ट कार्यक्रम – श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का उत्तरप्रांतीय अधिवेशन दिनाँक 4

अक्टूबर को रखा गया। दिनाँक 6 अक्टूबर को श्री टोडरमल स्मारक भवन में होने वाले श्री आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पात्रों का अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया।

शिविर में प्रथम बार श्री टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के अभिभावकों की मीटिंग दिनांक 5 अक्टूबर को रखी गई, जिसमें छात्रों के अभिभावकों ने महाविद्यालय के अध्यापकों के साथ मिलकर अपने बालकों की प्रगति की जानकारी ली।

सायंकालीन बालकक्षा पण्डित अशोकजी जैन बकस्वाहा, पण्डित पंकजजी जैन बकस्वाहा, पण्डित साकेत जैन जयपुर तथा श्रीमती वन्दना जैन जयपुर द्वारा ली गई।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती रतनबाई ध.प. स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता, श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल कोलकाता, श्रीमती मुन्नीबाई ध.प. श्री राजकुमारजी सेठी वैशाली नगर जयपुर, श्रीमती अमृतबेन ध.प. स्व. श्री बेलजीलाल शाह मुम्बई, श्रीमती सुनीता ध.प. श्री प्रेमचंदजी बजाज एवं सुपुत्र तन्मय-ध्याता बजाज परिवार कोटा थे।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल कोलकाता, श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर, श्रीमती कल्पना नरेन्द्रजी जैन जयपुर एवं श्री सुनीलकुमारजी जैन ग्वालियर थे। विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद के निर्देशन में महाविद्यालय के छात्रों के सहयोग द्वारा संपन्न हुये।

शिविर समापन समारोह में शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने कहा कि शिविर में ३५ विद्वानों के माध्यम से लगभग ६४५ साधर्मियों ने प्रतिदिन १६ घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। लगभग २८६०० घंटों के सी.डी./डी.वी.डी. प्रवचन तथा १५ हजार रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुंचा। इस शिविर में लगभग ८३ स्नातक विद्वानों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। ●

प्रतिष्ठेय प्रतिमाओं की अगवानी सानंद संपन्न

श्री टोडरमल स्मारक भवन में विराजमान होने वाले जो दिगबर जिनबिम्ब तैयार होकर आ गये हैं, उनकी शिक्षण शिविर के दौरान 6 अक्टूबर को अगवानी की गई।

इस अवसर पर उनकी भव्य शोभा यात्रा निकाली गई जो बापूनगर के विभिन्न मार्गों से होती हुई स्मारक भवन पहुँची।

इस शोभायात्रा में सीमन्धर भगवान को श्री प्रकाशचंदजी गम्भीरमलजी जैन अहमदाबाद, युगमन्धर भगवान को डॉ. अरविन्दजी दोशी गोंडल, बाहु भगवान को श्री मणिभाई मयंकभाई ठगन टीकमगढ, सुबाहु भगवान को श्री सुरेशचंदजी जैन शिवपुरी सजे हुए रथ में लेकर चल रहे थे। इस शोभायात्रा में 21 इंच की स्फटिक रत्न की प्रतिमा श्री मुकेशजी जैन इन्दौर लेकर चल रहे थे। संभवत: अभी तक ज्ञात स्फटिक रत्न की दि. प्रतिमा में सबसे बड़ी 21 इंच की पद्मासन प्रतिमा श्री टोडरमल स्मारक भवन में विराजमान होगी।

इस अद्भुत भव्य प्रतिमा की अगवानी कर प्रवचन हॉल में लेकर आने का सौभाग्य श्री सुरेशचंदजी शशि जैन परिवार शिवपुरी को प्राप्त हुआ। ●

पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद का -

छठवाँ अधिवेशन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 14वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनाँक 4 अक्टूबर को टोडरमल स्नातक परिषद् का 6वां अधिवेशन संपन्न हुआ।

अधिवेशन की अध्यक्षता परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुरेशचंदजी पाटनी कोलकाता एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. अरविन्दजी दोशी गोंडल, श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, श्री प्रकाशचंदजी गंभीरमलजी सेमारी अहमदाबाद के अतिरिक्त कार्यकारिणी सदस्य पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री टोकर एवं पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली मंचासीन थे।

श्री टोडरमल स्मारक भवन में 21 से 27 फरवरी 2012 को होने जा रहे पंचकल्याणक महोत्सव में स्नातक परिषद की भूमिका विषय पर केन्द्रित इस अधिवेशन में सर्वप्रथम श्री विरागजी शास्त्री देवलाली ने एक अभिनव योजना प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमारी कर्मभूमि में होने वाले इस महोत्सव में सभी स्नातक सदस्य कम से कम 5100/- रुपये का योगदान करें एवं अपने कम से कम 5 मित्रों, परिचितों से भी योगदान दिलावें।

इस योजना का सभी ने करतल ध्वनि से स्वागत किया और लगभग 118 स्नातकों ने अपनी सहयोग राशि की स्वीकृति दी। इसके अतिरिक्त पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई एवं पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, पण्डित शिखरचंदजी शास्त्री सागर, पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री जयपुर, पण्डित मनीषजी कहान खड़ैरी एवं पण्डित संतोषजी शास्त्री बकस्वाहा आदि सदस्यों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

स्नातक परिषद के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि श्री टोडरमल स्मारक भवन में आगामी 21 से 27 फरवरी 2012 तक होने वाला पंचकल्याणक हमारी कर्मभूमि में होने वाला महोत्सव है और इसमें सहयोग के लिए स्नातक परिषद तन-मन-धन से तत्पर है।

अधिवेशन का संचालन परिषद के महामंत्री पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने एवं मंगलाचरण कु. श्रुति जैन ने किया। ●

सीढ़ी शिलान्यास संपन्न

खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ पंचमेरु गजदंत नंदीश्वर जिनमंदिर के ऊपर 5.5 फीट की पद्मासन जिन प्रतिमा विराजमान की जा रही है, ऊपर पहुँचने हेतु दिनांक 14 सितम्बर को सीढ़ी शिलान्यास संपन्न हुआ।

विधि-विधान के कार्य पण्डित मुकेशजी जैन कोठादार, पण्डित संजयजी जैन, पण्डित सचिनजी मोदी एवं पण्डित एकत्वजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये। **- सुनील जैन सरल, खनियांधाना**

जयपुर पंचकल्याणक के –

प्रमुख प्रतिभागियों का अभिनन्दन

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल स्मारक भवन में 21 से 27 फरवरी 2012 तक होने वाले श्री 1008 आदिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रमुख पात्रों, प्रतिमा विराजमानकर्त्ता, भेंटकर्त्ता, चरणचिह्न विराजमानकर्त्ता, प्रमुख सहयोगकर्त्ता आदि महानुभावों का अभिनन्दन समारोह दिनांक 6 अक्टूबर को शिक्षण शिविर के अवसर पर सम्पन्न हुआ।

इस समारोह की सभा के अध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री विवेककुमारजी काला जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी जयपुर, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री मुकेशजी जैन इन्दौर, श्री सुशीलकुमारजी गोदीका जयपुर, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, श्री जितेन्द्रजी जैन जयपुर, श्री अजितकुमारजी जैन बड़ौदा, श्री राजेन्द्रकुमारजी गोधा जयपुर, श्री राजकुमारजी काला जयपुर, श्री बालचंदजी पाटनी कलकत्ता, आदि महानुभाव मंचासीन थे।

श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने पंचकल्याणक की रूपरेखा का विस्तृत परिचय सभा को दिया।

91 इंच की अवगाहना वाले भगवान बाहुबलि के विराजमानकर्त्ता श्री अजितकुमारजी जैन परिवार बड़ौदा का तिलक लगाकर, माल्यार्पण कर, शॉल ओढाकर, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र भेंटकर स्वागत किया गया। तदुपरान्त महोत्सव के कुबेर इन्द्र श्री मुकेशजी जैन इन्दौर; सनत इन्द्र परिवार से श्री प्रदीप-कुसुमजी चौधरी किशनगढ; आनत इन्द्र परिवार से श्री दिलीपभाई कमलाक्षी शाह मुम्बई; प्रतीन्द्रों में श्री सुरेश-शशि जैन शिवपुरी, श्री आशीष-स्वानुभूति जैन मुम्बई, श्री प्रेमचंद-राजेश गुरहा रायपुर; राजाओं में श्री के.एल.जैन जयपुर के अलावा चरण चिह्न विराजमानकर्त्ता श्री पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर, श्रीमती रेणु सुरेश पाटनी कलकत्ता, श्री नरेशजी पाटोदी कोलकाता, श्री हंसा प्रकाशचंद सेठिया सरदारशहर, श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल, श्री राजकुमारजी जैन पुट्ठा मिल भोपाल, श्री मगनलाल राजेन्द्रकुमारजी जैन भोपाल, श्री अनीश मांगीलालजी जैन नरसिंहपुरा इन्दौर, श्री सुभाषजी जैन नांगलोई, तीन शिखर पर कलशारोहणकर्त्ता श्री अजितकुमार शशि तोतुका जयपुर के अतिरिक्त प्रतिष्ठा महोत्सव में प्रमुख सहयोगी श्री जिनेन्द्रजी जैन दिल्ली इत्यादि सभी का तिलक लगाकर, माल्यार्पण कर, शॉल ओढाकर, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र भेंटकर स्वागत किया गया।

ज्ञातव्य है कि इस महोत्सव में प्रतिभाग करने वाले शेष अनेक इन्द्र, प्रतीन्द्र, राजा, प्रतिमा विराजमानकर्त्ता, चरणचिह्न विराजमानकर्त्ता व अन्य प्रमुख सहयोगीगण जो यहाँ किसी व्यस्ततावश उपस्थित नहीं हो सके, उनका यथा अवसर अभिनन्दन किया जायेगा। ●

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –

वेबसाईट – www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

डॉ.भारिल्ल का राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ दिल्ली में व्याख्यान

नई दिल्ली : यहाँ श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में दिनांक 19 सितम्बर को जैन विभाग द्वारा अहिंसा विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी के अध्यक्ष के रूप में कुलपति प्रो. शशिप्रभा जैन मंचासीन थे। मुख्य अतिथि प्रो. शुद्धानन्दजी पाठक थे।

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने कहा कि राग ही हिंसा का कारण है। साथ ही उन्होंने अनेक विद्वानों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी अत्यंत व्यवस्थित शैली में दिये।

इस अवसर पर प्रो. सुदीपजी शास्त्री, प्रो. परोहा, डॉ. कल्पना जैन एवं अनेक विद्वान उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन प्रो. वीरसागरजी शास्त्री एवं मंगलाचरण डॉ. जयकुमारजी उपाध्ये ने किया। संयोजन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनेकान्तकुमारजी शास्त्री एवं डॉ.कुलदीपजी ने किया।●

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा आयोजित साप्ताहिक गोष्ठियों की श्रृंखला में दिनाँक 16 अक्टूबर को **'द्रव्य-गुण-पर्याय : एक अनुशीलन'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में विवेक जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) व नवीन जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। साथ ही पंकज जैन, निलय जैन एवं समर्पण जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

आभार प्रदर्शन टोडरमल महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया। गोष्ठी का संचालन अभिषेक जैन दिल्ली एवं अर्पित जैन सेमारी (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया। मंगलाचरण विशाल जैन पिड़ावा (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया। ●

श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में सम्मानित

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के स्नातक पण्डित संजयकुमारजी शाह (व्याख्याता-राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, डूंगरपुर) को सामाजिक कार्यों, संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार, नवीन शिक्षण पद्धति से श्रेष्ठ अध्ययन कार्यों, शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम, उत्कृष्ट लेखन शैली एवं अनेक विषयों में स्नातकोत्तर शिक्षा जैसे उत्कृष्ट कार्यों के लिए दिनांक 5 सितम्बर को 'शिक्षक दिवस' के अवसर पर बिड़ला ऑडिटोरियम, जयपुर में **श्रेष्ठ शिक्षक** के रूप में सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्री शिवराज पाटील (राज्यपाल-राजस्थान) द्वारा मोमेन्टो, श्री अशोक गहलोत (राजस्थान मुख्यमंत्री) द्वारा प्रशस्ति-पत्र एवं श्री भंवरलाल मेघवाल (शिक्षा मंत्री) द्वारा 11 हजार का चेक प्रदान किया गया।

इस उपलब्धि पर वीतराग-विज्ञान की ओर से हार्दिक बधाई ! ●

पंचकल्याणक सफल बनाने हेतु –

शास्त्री विद्वानों का अभूतपूर्व उत्साह

पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में फरवरी माह में होने जा रहे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु संपूर्ण मुमुक्षु समाज का उत्साह देखने को मिल रहा है। श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के भूतपूर्व स्नातक विद्वान भी इस महामहोत्सव को सफल बनाने के लिए तन-मन-धन से सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं। पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद की विशेष योजना में अब तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा फंड की विभिन्न मदों में 91 शास्त्री विद्वानों ने लगभग 14 लाख 3 हजार रुपये की राशि सहयोग स्वरूप प्रदान की है। इसका विवरण निम्नानुसार है –

1. स्वानुभूति टडैया मुम्बई – 2 लाख 50 हजार रुपये (प्रतीन्द्र)
1. विपिन शास्त्री नागपुर – 1 लाख 31 हजार रुपये (राजा-रानी)
2. सौरभ-गौरव शास्त्री इन्दौर – 1 लाख रुपये (राजा-रानी),
3. सौरभ शास्त्री फिरोजाबाद – 80 हजार रुपये,
4. अनुप्रेक्षा जैन मुम्बई – 41 हजार रुपये,
5. देवांग गाला मुम्बई – 36 हजार रुपये,

6. 31 हजार रुपये देने वाले महानुभाव – श्रेयांस शास्त्री जयपुर, विपिन शास्त्री मुम्बई (भूमिगोचरी राजा) एवं अनेकान्त भारिल्ल मुम्बई (भूमिगोचरी राजा)

7. 25 हजार रुपये देने वाले महानुभाव – जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर, महावीरप्रसाद शास्त्री उदयपुर,

8. 21 हजार रुपये देने वाले महानुभाव – पीयूष शास्त्री जयपुर, सोनू शास्त्री बैंगलोर, संदीप शास्त्री गोहद, अविरल शास्त्री विदिशा, ललित शास्त्री बण्डा (लखनऊ), धर्मेन्द्र शास्त्री कोटा, अभय शास्त्री खैरागढ,

9. 11 हजार रुपये देने वाले महानुभाव – अभयकुमारजी देवलाली, राकेशकुमारजी नागपुर, प्रमोद शास्त्री सागर, ऋषभ शास्त्री अहमदाबाद, मनीष शास्त्री रहली, अभिनव शास्त्री मैनपुरी, श्रेयांस शास्त्री जबलपुर, सुदीप शास्त्री बरगी, समकित शास्त्री सिलवानी, सौरभ शास्त्री खड़ैरी, वरूण शास्त्री मुम्बई, अरविन्द शास्त्री ग्वालियर, जयेन्द्र जैन मुम्बई, अरविन्द शास्त्री ग्वालियर, ध्रुवेश शास्त्री अहमदाबाद, उदयमणि शास्त्री अहमदाबाद, अंकित शास्त्री लूणदा,

10. निलय-निपुण शास्त्री आगरा – 7100 रुपये

11. 5100 रुपये देने वाले महानुभाव – विराग शास्त्री जबलपुर, राजकुमार शास्त्री बांसवाड़ा, शुद्धातम शास्त्री मौ, आशीष शास्त्री टीकमगढ, जागेश शास्त्री जबेरा, अनंत विश्वम्भर सेलू , अभिषेक जैन बण्डा, अमित शास्त्री बीना, पंकज शास्त्री बण्डा, राजकुमार जैन बरगी, अमोल संघई हिंगोली, अनिल धवल भोपाल, विवेक शास्त्री गौरझामर, नंदकिशोर शास्त्री काटोल, निखिल शास्त्री कोतमा, पंकज शास्त्री खड़ैरी, दीपक शास्त्री जबेरा, दीपक शास्त्री

जबेरा, नरेश शास्त्री पन्ना, अभिजीत शास्त्री जयपुर, विकास शास्त्री ग्वालियर, प्रभात जैन टीकमगढ, रूपेश शास्त्री मुम्बई, हितेश शास्त्री मुम्बई, जितेन्द्र राठी पुणे, निकलंक शास्त्री कोटा, मनीष शास्त्री कहान जयपुर, सुनील शास्त्री जयपुर, संतोष शास्त्री बकस्वाहा, प्रभात शास्त्री जयपुर, विवेक शास्त्री पिड़ावा, प्रमोद शास्त्री दौसा, अजित शास्त्री अलवर, शिखरचंद शास्त्री सागर, अध्यात्मप्रकाश जयपुर, विपुल शास्त्री सागर, सुरेश शास्त्री गुना, चेतन शास्त्री खड़ैरी, सन्मति शास्त्री पिड़ावा, रमेशचंद शास्त्री जयपुर, प्रमोद शास्त्री दिल्ली, जिनचंद शास्त्री हेरले, संजय शास्त्री दौसा, विनीत शास्त्री आगरा, राजीव शास्त्री भिण्ड थानागाजी, गणतंत्र शास्त्री आगरा, श्रेयांस शास्त्री अभाना, राजेश शास्त्री जयपुर, रवीन्द्र महाजन शास्त्री नागपुर, अशोक मांगुलकर राघौगढ, सुमित शास्त्री टीकमगढ, अमित शास्त्री गुना, संजीव शास्त्री खड़ैरी जयपुर, किशोर शास्त्री बैंगलोर, संजय सिंघई शास्त्री रटलाई।

इसके अतिरिक्त जिन शास्त्री विद्वानों को इस योजना में सहयोग करने का भाव हो, वे इस योजना के संयोजक श्री विराग शास्त्री से उनके मो. 9373294684 अथवा श्री पीयूष जैन से उनके मो. नं. 9785643202 पर संपर्क कर सकते हैं। ●

श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय का –

परीक्षा परिणाम घोषित

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का वर्ष 2010 का परीक्षा परिणाम दिनांक 7 अक्टूबर को शिक्षण शिविर में घोषित किया गया, जो निम्नानुसार है-

उपाध्याय कनिष्ठ (11वीं) में प्रथम स्थान संदेश जैन मोकलपुर एवं द्वितीय स्थान नितिन जैन झालरापाटन ने प्राप्त किया।

उपाध्याय वरिष्ठ (12वीं) में प्रथम स्थान विवेक जैन अमरमऊ एवं द्वितीय स्थान निलय जैन बरायठा ने प्राप्त किया।

शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रथम स्थान नवीन जैन उज्जैन एवं द्वितीय स्थान कु. नयना जैन खनियांधाना ने प्राप्त किया।

शास्त्री द्वितीय वर्ष में प्रथम स्थान कु. प्रतीति पाटील एवं द्वितीय स्थान अंकित जैन छिन्दवाड़ा ने प्राप्त किया।

शास्त्री तृतीय वर्ष में प्रथम स्थान अभिषेक जैन कोलारस एवं द्वितीय स्थान जयेश जैन उदयपुर व राहुल जैन नौगांव ने प्राप्त किया।

उपाध्याय वर्ग में प्रथम स्थान सौरभ जैन कोलारस (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं द्वितीय स्थान कु. ईर्या जैन दिल्ली (उपाध्याय वरिष्ठ) व पवन जैन मुम्बई (उपाध्याय कनिष्ठ) ने प्राप्त किया। शास्त्री वर्ग में प्रथम स्थान कु. अनुभूति जैन गुना (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं द्वितीय स्थान अभिषेक जैन इन्दौर (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने प्राप्त किया।

प्रवीणता सूची में स्थान पाने वाले सभी छात्रों को प्रमाणपत्र एवं नकद राशि देकर पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार वितरण श्री प्रकाशचंदजी जैन अहमदाबाद के करकमलों से हुआ। ●

शोक समाचार

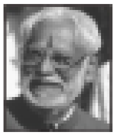

1. सागर (म.प्र.) निवासी स्वतंत्रता सेनानी, पूर्व सांसद एवं म.प्र. कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष सेठ डालचंदजी जैन का दिनांक 25 सितम्बर को 83 वर्ष की आयु में शान्तपरिणामों से देहावसान हो गया। तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में तो आपका महत्वपूर्ण योगदान था ही, जैन समाज के भी आप सभी के चहेते नेता थे। अ.भा.दि.जैन परिषद के अध्यक्ष के रूप में रहकर आपने परिषद की गौरव गरिमा में चार चांद लगा दिए, जिससे उन्हें आज भी याद किया जाता है। समाज सुधारक के रूप में भी आपकी विशिष्ट पहिचान थी। आपकी इच्छानुसार मरणोपरांत नेत्रदान किया गया तथा तेरहवीं का निषेध रखा। तारण समाज के लिए तो आपका अनुकरणीय योगदान रहा ही, तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं महासमिति में भी आप अग्रिम पंक्ति में रहे।

2. ललितपुर (उ.प्र.) निवासी श्री चम्पालालजी जैन पटवारी का दिनांक 14 अगस्त को 92 वर्ष की आयु में शान्तपरिणामों से देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक डॉ. सुदीपजी शास्त्री दिल्ली के पिताजी थे। आपकी स्मृति में संस्था को 100/- रुपये प्राप्त हुये।

3. आगरा निवासी श्रीमती कमला जैन धर्मपत्नी श्री सुमतचंदजी जैन का दिनांक 28 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत धार्मिक महिला थीं। आप स्मारक भवन में आयोजित अनेक शिविरों में आकर तत्त्वज्ञान का लाभ लेती थीं। आपकी इच्छानुसार मरणोपरांत नेत्रदान किया गया तथा तेरहवीं का निषेध रखा। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित विनीतकुमारजी शास्त्री की माताजी थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु एक-एक हजार रुपये प्राप्त हुये।

6. बेगमगंज-रायसेन (म.प्र.) निवासी श्री महेन्द्रकुमारजी मुन्शी का दिनांक 11 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

7.बेलगांव (कर्नाटक) निवासी चि. शीतल का दिनांक 20 अगस्त को शांतपरिणामों पूर्वक दहावसान हो गया। आपकी स्मृति में तत्त्वप्रचारार्थ संस्था को 1001 रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों-यही मंगल भावना है।

(पृष्ठ 4 का शेष ...)

ज्ञातव्य है कि इसी शिविर के दौरान इन्दौर निवासी श्री मुकेशजी (ढाईद्वीप) द्वारा कुबेर इन्द्र हेतु, श्री दिलीपभाई शाह द्वारा बेटी-जमाई श्रीमती ध्वनि-मेहुल शाह को इन्द्र हेतु एवं श्री नरेन्द्र-कल्पना बड़जात्या श्यामनगर जयपुर, गौरव-सौरभ शास्त्री इन्दौर, श्री दीपेश शाह जयपुर, श्री नरेश जैन श्योपुर, श्री पद्मचंद जैन कोटा, श्री मुकेश-राजेश जैन इन्दौर द्वारा राजा-रानी हेतु स्वीकृति प्राप्त हुई। ●